कौशिकी क्षेत्र : बौद्धकालीन अगुत्तराप जनपद

—डॉ० शिव कुमार मिश्र

बिहार रिसर्च सोसाइटी, पटना।

कौशिकी क्षेत्र को बौद्धकाल में अंगुत्तराप जनपद कहा जाता था। बौद्ध साहित्य में अनेक स्थानों पर अंगुत्तराप तथा उसकी राजधानी आपण निगम का उल्लेख किया गया है। महात्मा बुद्ध द्वारा इस प्रदेश का भ्रमण करने तथा धर्मोपदेश कर अनेक लोगों को अपने धर्म में दीक्षित करने का भी उल्लेख मिलता है। यद्यपि प्राचीन साहित्यों के आधार पर गंगा से उत्तर हिमालय की तराई क्षेत्र तक तथा पश्चिम में गण्डक से लेकर कोशी नदी तक के क्षेत्र को विदेह अथवा मिथिला राज्य के अन्तर्गत रखा गया है। शतपथ ब्राह्मण[1] से संकेत मिलता है कि सदानीरा अर्थात् गंडक नदी से पूरब का क्षेत्र विदेह कहलाता था। बाल्मिकीय रामायण तथा बौद्धसाहित्यों से स्पष्ट संकेत मिलता है कि गंगा नदी के उत्तरी भाग में विदेह राज्य अवस्थित था।[2] वृहद्विष्णु पुराण में कहा गया है[3]—

गङ्गा हिमवतोर्मध्ये नदी पञ्चदशान्तरे।

तैरमुक्ति रिति ख्यातो देशः परम शोभनः ॥

कौशिकीतु समारभ्य गंडकी मधि गम्य वै। मिथिलामहात्म्य, 2·5 अर्थात् विदेह अथवा तीरमुक्ति क्षेत्र का विस्तार कौशिकी से गंडकी तक था। फिर शक्ति संगम तंत्र में कहा गया है—

गंडकी तीरमारभ्य चम्पारण्यान्तकं शिवे।

विदेह भूः समाख्याता तैरमुक्तयमिधः सतु॥

अर्थात् गंडक से लेकर चम्पा के वन तक विदेह भूमि कहलाता था। मैथिली कवि चंदा झा ने भी वृहद् विष्णुपुराण की बातों का समर्थन करते हुए कहा है—

गंगा बहथि जनिक दक्षिण दिशि पूर्व कौशिकी धारा।

पश्चिम बहथि गंडकी उत्तर हिमवत् वन विस्तारा।

कमला, त्रियुगा, अमृता, धेमुरा, वाग्मती कृत सारा।

मध्य बहथि लक्ष्मणा प्रमृति से मिथिला विद्यागारा॥

इस तरह प्राप्त साहित्यिक साक्षयों से स्पष्ट होता है कि कोसी क्षेत्र प्राचीन काल में विदेह राज्यान्तर्गत आते थे। यहाँ उत्तर वैदिक काल में जनक राजवंश के चौवन राजाओं ने शासन किया था। इस वंश के अंतिम राजा कराल जनक हुए जिनके दुराचार के कारण जनता में विद्रोह हुई तथा गंणतंत्र की स्थापना हुई। विदेह राज्य ने जिस गणतांत्रिक शासन प्रणाली को जन्म दिया वह दुनिया का प्राचीनतम गणतंत्र था और इसी के बल पर आज भारत अपने को प्राचीनतम गणतंत्र कहकर गौरवान्वित हो रहा है।[4]

छठी शताब्दी ई-पू० में भारत सोलह महाजन पदों में विभक्त था। विदेह राज्य के सम्पूर्ण क्षेत्र को वज्जि महाजनपद के अन्तर्गत रखा गया, जिसे वृजि संघ भी कहा जाता था। हेमचन्द्र राय चौधरी[5] के अनुसार वज्जि महाजनपद गंगा के उत्तर नेपाल की पहाड़ियों तक फैला हुआ था। पश्चिमी सीमा पर गंडक प्रवाहित होती थी, जो वज्जि प्रदेश को मल्ल था। कोशल से अलग परती थी। पूर्व में कोशी तथा महानन्दा तक सीमा का विस्तार था। इस तरह स्पष्ट होता है कि अंगुत्तराप जनण्द भी वज्जि महाजनपद के अन्तर्गत अवस्थित था तथा यहाँ भी गणतांत्रिक प्रणाली ही स्थापित रही होगी। लेकिन संयुक्त निकाय[6] के अनुसार अंग राज्य के अन्तर्गत गंगा नदी के उत्तरी भाग में अंगुत्तराप स्थित था। मज्झिम निकाय[7] भी इसी मत का समर्थक है कि अंगुत्तराप अंग राज्य का एक भाग था। इसी आधार पर कुछ लोगों का मानना है कि अंग पर विम्बिसार के आक्रमण के पश्चात् अंगुत्तराप अंग से अलग होकर वज्जि गणतंत्र में शामिल हो गया।[8] पूर्व में कहा जा चुका है, कि वज्जिगणतंत्र की पूर्वी सीमा कोशी नदी तक विस्तृत थी।[9] किन्तु उपर्युक्त दो बौद्ध ग्रन्थों के अलावा किसी भी अन्य श्रोत से यह जानकारी नहीं मिलती है कि अंग राज्य का विस्तार गंगा नदी के उत्तरी भाग पर भी था, जबकि इस बात के पर्याप्त प्रमाण मिलते हैं कि विदेह राज्य तथा वज्जि महाजनपद पूरब में कौशिकी तथा दक्षिण में गंगा तक विस्तृत था और बौद्धकाल में सम्पूर्ण कौशिकी क्षेत्र को अंगुत्तराप कहा गया।

महापंडित राहुल सांकृत्यायन[10] ने अंगुत्तराप शब्द का विश्लेषण अंग-उत्तर-आप के रूप में किया है, जिसका तात्पर्य अंग के उत्तर में जल के विशाल भण्डार से है। मिथिला शरण पांडे[11] ने अंगुत्तराप क्षेत्र की समता महाभारत[12] में वर्णित जलोद्भव से की है। जबकि रायचौधरी[13] ने विदेह क्षेत्र को ही जलोद्भव कहा है। इस तरह बौद्ध काल में विदेह का यही भाग अंगुत्तराप कहलाया।

पुनः अश्वघोष के अनुसार अंगुत्तराप में मही नदी बहती थी[14] तथा अंगुत्तराप की राजधानी आपण मही नदी के उत्तरी तट पर बसी हुई थी। विनयपिटक[15] तथा अंगुत्तर निकाय में मही नदी को भारत की पाँच महा नदियों की श्रेणी में रखा गया है। मही नदी के अतिरिक्त यमुना, अचिरवती, सरभू तथा गंगा को इस सूची में रखा गया है। बौद्धग्रन्थों में मही नदी की विशालता का जिस प्रकार वर्णन मिलता है, इससे स्पष्ट होता है कि आधुनिक कोशी नदी को ही पालि ग्रन्थ में मही नदी कहा गया है।[17] उक्त ग्रन्थों में यह भी कहा गया है कि आपण निगम मही नदी के उत्तरी तट पर बसा हुआ था, जिससे ऐसा लगता है कि आपण निगम के दक्षिणी भाग से मही नदी की कोई धारा गुजरती होगी। जैसा कि आज भी हम देखते हैं कि महानंदा से पश्चिम में [illegible] नदी तक का क्षेत्र कोशी नदी का क्रीड़ा स्थल बना हुआ है और बदलती धाराओं के कारण कोशी की अनेक पुरानी धाराएँ [illegible] अलग नदी का स्वरूप ग्रहण कर लेती है। थेरी गाथा[18] में कोसी नदी को कौशिकी कहा गया है, जो हिमवा अर्थात् हिमालय से निकलती थी। इसका तट बड़ा ही मनोरम स्थल था जहाँ गुलाब, सेव, आहार फल, खजूर तथा गूलर आदि पेड़ों की बहुलता थी। कौशिकी के तट पर तीन योजन विस्तृत आम का बगीचा था। इन विवरणों से स्पष्ट होता है कि उस समय यह नदी अपने साथ रेत लाती थी, जो इसके तटों को उपजाऊ बनाती थी। इसीलिए इतने अच्छे-अच्छे वृक्ष थे।

महात्मा बुद्ध द्वारा अंगुत्तराप प्रदेश का भ्रमण करने का उल्लेख अनेक बौद्ध ग्रन्थों में मिलता है।[19] विनयपिटक[20] के अनुसार बुद्ध एक बार 1250 भिक्षुओं के साथ यहाँ पहुँचे थे, जहाँ आपण निगम में जटिल (जटाधारी) केणिय ने सभी का आतिथ्य सत्कार किया था। आपण से बुद्ध ने कूशीनारा के लिए प्रस्थान किया।[21] सुत्तनिपात[22] के अनुसार आपण निगम में केणिय जटिल नामक एक ब्राह्मण था, जिसने बुद्ध को उनके 1250 शिष्यों के साथ निमंत्रित किया। बुद्ध ने इस निमंत्रण को स्वीकार कर लिया।[23] केणिय जब बुद्ध के स्वागत में एक भोज की तैयारी कर रहा था, उसी समय सेल नामक एक ब्राह्मण अपने तीन सौ शिष्यों को लेकर वहाँ आ पहुँचा। उसने केणिय से प्रश्न किया कि क्या किसी विवाहोत्सव अथवा राजा बिम्बिसार के आने की यहाँ तैयारी की जा रही है? केणिय ने बुद्ध के विषय में बताया [illegible] एक विद्वान ब्राह्मण था। अपने सभी शिष्यों को लेकर वह बुद्ध के निकट गया तथा उनसे बहुत प्रभावित हुआ। सेल अपने [illegible] शिष्यों के साथ बुद्ध का अनुयायी बन गया। अगले दिन जब बुद्ध केणिय के पास गए तो सेल भी अपने शिष्यों के साथ उस भोज में शामिल हुआ। सेल में इस परिवर्त्तन को देखकर केणिय भी बहुत प्रसन्न हुआ। केणिय न मौरेय तैयार करके बुद्ध संघ को समर्पित किया था और तभी से बुद्ध ने मौरेय पान की छूट संघ के लिए दे दी थी।

भोज समाप्ति के पश्चात् एक दिन बुद्ध आपण के निकट स्थित एक जंगल को गए तथा एक पेड़ के नीचे चिंतन के लिए बैठ गए। आपण का एक प्रसिद्ध गृहस्थ पोतलिय वहाँ आया तथा बुद्ध से मिला।[24] बुद्ध के उपदेश से वह इतना प्रभावित हुआ, कि उनका अनुयायी बन गया। इस तरह से उसने संघ से इस तरह के उसनें प्रवृष्टि पा ली।[25]

मज्झिम निकाय[26] के अनुसार उदायि भी एक बार आपण निगम के पड़ोस में स्थित जंगल में बुद्ध से मिला उदायि का वर्णन उस घटनाक्रम में आता है जब वह एक बदली घिरी अंधेरी रात को भिक्षाटन के लिए निकला, तो एक स्त्री उसे देखकर डर गयी और उसने गाली देना आरम्भ कर दिया। उदयी को एक बुरी आत्मा अथवा प्रेतात्मा समझकर वह बहुत डर गयी।

आपण संभवतः अंगुत्तराप का मुख्य नगर था और शायद इसीलिए अंगुत्तराप के साथ हमेशा ही इसका उल्लेख मिलता है। सारिपुत्त के साथ बुद्ध यहाँ ठहरे थे। यहाँ अनेक प्रकार के सुत्तों का उपदेश किया गया, जिनमें पोटलिय सुत्र,[27] लटुकि कोपमसुत्त,[28] सेल सुत्त[29] एवं सदध अथवा आपण सुत्त[30] प्रमुख थे। बुद्ध घोष के अनुसार आपण ब्राह्मणों का एक नगर था, जहाँ सेल का निवास था।[31] बुद्ध ने आपण के भ्रमण के क्रम में एक सप्ताह से अधिक समय यहाँ बिताया था। और सम्भवतः इसी अन्त में उन्होंने सेल एवं केणिय के साथ-साथ अन्य तीन सौ लोगों को अपने धर्म में दीक्षित किया था।

संयुक्त निकाय में आपण को निगम कहा गया है (अंगानाम् निगमों)। बुद्धघोष के अनुसार यह गाँव आपण इसलिए कहलाता था, क्योंकि इसमें 20 हजार बाजारें थी (आपणाः) जो अपनी दुकानों के लिए प्रख्यात थे (अपणानम् उस्सन्नत्ता)।[32] एक निगम के लिए इतनी बड़ी संख्या में दुकानों का होना अतिशयोक्ति जान पड़ता है, क्योंकि साधारणतया गाम तथा निगम शब्द का प्रयोग पालि साहित्य में साथ-साथ मिलता है। मज्झिम निकाय क अनुसार गाम एवं निगम सालवन के समीप थे।[33] अंगुत्तर निकाय के अनुसार गाम तथा निगम के निकट स्थित बड़े झील में मानव, बैल तथा गाय सभी पानी पीने के लिए आया करते थे।[34] गाम एवं निगम से बालक एवं बालिकाएँ तालाब के पानी में नहाने तथा मनोरंजन करने आया करते थे।[35] अंगुत्तर निकाय[36] के अनुसार गाम तथा निगम के निकटस्थ एक बाजार से अनाज के एक बड़े ढेर को लोगों ने अपने हाथ, आँचल तथा थैलों में उठाकर ले आए और जब कोई उन्हें पूछता है कि कहाँ से ये अनाज लाए? तो लोग उत्तर देते हैं कि उसे एक गाम एवं निगम के समीप स्थित बड़े अन्न के ढेर से लाए है। गाम एवं निगम में भिक्षाटन के लिए आता है। इसके अनुसार गाम तथा निगम के प्रधान गामणि होते थे।[38] इस तरह ये दोनों शब्द गाम एवं निगम एक दूसरे के पर्याय के रूप में प्रयुक्त हुए हैं।

कुछ संदर्भो से यह संकेत मिलता है कि गामों का विकसित रूप निगम कहलाता था।[39] इनका अभिप्राय ऐसे गाम से है, जो शहरों के आकार और अन्य विशेषताओं के अनुरूप अपना विकास कर चुके थे। निःसंदेह ये बड़े गाम होते थे और विकास की परम्परा से जुड़े होने के कारण ही इन्हें निगम की कोटि में रखा जाता था।[40] संभवतः निगम का स्थान ग्राम एवं नगर के बीच

का माना जाता था और निगम को व्यापारिक नगर अथवा बाजार के स्थान के रूप में कल्पित किया जा सकता है।[41] **गांधार जातक** के अनुसार मिथिल नगर में सोलह हजार गाम थे, किन्तु रीज डेविड्स महोदया इस मत पर संदेह व्यक्त करती हुई प्रश्न उठाती हैं, कि क्या उतनी बड़ी संख्या में गाँव एक शहर में हो सकते थे या उपनगरों को भी इसमें मिलाया गया था? उनके अनुसार गाम एवं निगम के बीच कोई निश्चित सीमा रेखा नहीं थी तथा कुछ गाम निगमों के बराबर भी हो सकते थे।[42] किन्तु निगम का स्वरूप गाम तथा नगर अथवा राजधानी के बीच में माना गया है। भिन्न-भिन्न विद्वानों द्वारा निगम शब्द को बाजार, प्रधाननगर,[43] नगर,[44] नगर प्रधान क्षेत्र,[45] जिला[46] या मण्डल इत्यादि के रूप म ग्रहण किया गया है।

पालि कोप में निंगम की उत्पत्ति संस्कृत के 'गाम' धातु और 'नि' उपसर्ग से बतायी गयी है और इसका तात्पर्य मिलना एकत्रित होना है।[47] वैदिक साहित्य में निगम का कोई तत्सम शब्द प्राप्त नहीं होता। समकालीन सूत्र साहित्य में प्राप्त 'महाग्राम' शब्द संभवतः निगम का द्योतक है।[48] यदि ग्रामों को सजातीय समूहों का प्रधान वास स्थान माना जाए तो निगम अनेक समूहों का प्रयाध्आवासीय केन्द्र प्रतीत होता है। नरेन्द्र बागले के अनुसार विस्तार की दृष्टि से निगम एक मिश्रित ग्राम का प्रकार था तथा इसके अतिरिक्त एक बड़ा आर्थिक केन्द्र भी था।[49] आपण निगम के साथ भी यही मत सही जान पड़ता है। आपण बाजार का पर्यायवाची है और इसके साथ प्रयुक्त होकर निगम बाजार प्रधान निगम का स्वरूप ग्रहण कर लेता है।[50] मैक्समूलर ने भी आपण को अंगुत्तराप का एक नगर (Town) के रूप में उल्लेख किया है।

अंगुत्तराप के आपण निगम की आधुनिक पहचान अभी तक सही-सही नहीं हो पायी है। मिथिला सरण पाण्डे का मानना है कि यह स्थान गंगा नदी के उत्तर में आधुनिक कोशी मंडल में कहीं स्थित था।[51] हवलदार त्रिपाठी का मानना है कि आपण निगम वनगाँव को छोड़कर दूसरा कोई नहीं हो सकता है। उनके अनुसार कंदहा ग्राम जो वनगाँव से 3 कि० मी० उत्तर-पश्चिम में स्थित है, कि समता कणिय ग्राम अथवा केणिय वाह से की जानी चाहिए। बुद्ध आपण निगम के पास जातिय वन नामक स्थान पर ठहरे थे। यही जातिय वन आज देवन वन के नाम से विख्यात है, जो बाद में देवों का वन कहलाया।[52] देवन वन कंदहा के सटे पूर्व में है और वनगाँव से सिर्फ दो कि० मी० उत्तर में वर्त्तमान है। सेल का निवास सिंहउल गाँव से किया गया है।[53] उपरोक्त मतों की पुष्टि तभी संभव हो सकता है, जब उक्त स्थलों के पुरातात्विक उत्खन्न तथा गहन अन्वेषण कराये जायँ। वैसे वनगाँव अवशेषों से भरा हुआ एक महत्त्वपूर्ण पुरातात्विक स्थल है। इसलिए इस पर प्राचीन आपण होने की संभावना व्यक्त की जा सकती है। यद्यपि हवलदार त्रिपाठी ने पालि साहित्य में वर्णित अनेक गाँवों की आधुनिक पहचान करने का सराहनीय प्रयास किया है, लेकिन जो तरीका अपनाया गया है। वह समुचित नहीं जान पड़ता [54] क्योंकि महात्माबुद्ध तथा अभी के समय का अन्तराल करीब ढ़ाई हजार वर्ष है और इस स्थिति में किसी नाम के साम्य को आधार बनाकर किसी आधुनिक गाँव के नाम को सही मानना उचित नहीं होगा। अतएव वनगाँव तथा उससे संबंधित पुरातात्विक स्थलों का उत्खनन कराना परमावश्यक है।

सुत्तनिपात[55] के घनियसुत्त में पशुपालक धनिय तथा महात्माबुद्ध के मध्य संवाद का उल्लेख मिलता है। अपने खेत एवं पशुओं के दूध से आत्म निर्भर बनकर धनिय सुखपूर्वक गुजर बसर करता था।[56] उक्त संवाद से स्पष्ट संकेत मिलता है कि उस काल में एक गृहस्थ किस तरह आत्म निर्भर होते थे।

धनिय तथा उनकी पत्नी के बौद्धधर्म में दीक्षित होने के बाद पशुपालकों ने उनके लिए एक विहार बनवाया, जिसे गोकुलांक विहार के नाम से जाना जाता था। बुद्धघोष के अनुसार उनके समय में भी इस विहार का अस्तित्व बचा हुआ था।[57] यह विहार मही नदी के तट पर विदेह राज्य में स्थित या जोसावरथी से सात सौ योजन की दूरी पर स्थित था। मही अर्थात् कोशी नदी के तट पर अवस्थित होने के कारण गोकुलांक विहार अंगुत्तराप जनपद में ही कहीं स्थित रहा होगा। इसकी आधुनिक पहचान अभी तक नहीं हो सकी है।

इस प्रकार प्राप्त साक्ष्यों से स्पष्ट होता है कि वर्तमान कोशी क्षेत्र को बौद्ध काल में अंगुत्तराप जनपद कहा जाता था जो वज्जि महाजनपद का अंग था। महाजनपदीय व्यवस्था से पूर्व इसी क्षेत्र को विदेह राज्य भी कहा गया है। बौद्ध साहित्य से हमें यह भी जानकारी मिलती है कि महात्माबुद्ध के अंगुत्तराप भ्रमण से पूव वहाँ वैदिक संस्कृति कायम थी। आपण वैदिक शिक्षा का प्रधान केन्द्र था। सुत्तनिपात[58] के अनुसार आपण का एक विद्वान ब्राह्मण सेल तीन वेदों के अतिरिक्त अनेक विषयों (यथा, शब्दकोश, केटुभ, व्युत्पत्ति, इतिहास एवं व्याकरण) का प्रकाण्ड पंडित था। वह अपने आश्रम में तीन सौ शिष्यों को शिक्षा देते थे। बुद्ध के अंगुत्तराप भ्रमण के साथ ही इस क्षेत्र में बौद्ध मत का भी प्रचार-प्रसार हुआ, जो बाद के अनेक पीढ़ियों तक संबंधित होती गई। कौशिकी क्षेत्र में मिलने वाले बौद्ध पुरावशेषर इस तथ्य के प्रमाण हैं। अतः इस क्षेत्र में गहन पुरातात्त्विक अनुसंधान की आवश्यकता है जिससे इस क्षेत्र के इतिहास और पुरातात्त्विक के अनेक महत्त्वपूर्ण तथ्य उजागर हो सकें।

संदर्भ —

1. **शतपथ ब्राह्मण**, 1·4·10–19.
2. श्याम नारायण सिंह, **हिस्ट्री ऑफ तिरहुत**, कलकत्ता, 1922, 1.

3. द्रष्टव्य : शिव कुमार मिश्र, **एजुकेशनल आइडियाज एण्ड इन्स्टीच्यूशन्स इन एन्सिएन्ट इण्डिया** (बिथ स्पेशल रेफरेन्स टु मिथिला), नई दिल्ली 1998, प्रथम अध्याय।
4. शिव कुमार मिश्र, मिथिला राज्य : एक एतिहासिक तथ्य (प्रकाशनाधीन)।
5. हेमचन्द्र राय चौधरीं, प्राचीन भारत का राजनैतिक इतिहास, इलाहाबाद, 1980, 93.
6. संयुक्त निकाय, II, 437, 439.
7. मज्झिम निकाय, I, 359, 447; II, 146.
8. सेक्रेड बुक्स ऑफ ईस्ट, XVII, 1; परिशिष्टवर्वन्, VII, 22.
9. जी० पी० मलालशेखर, डिक्सनरी ऑफ पालि प्रोपर नेम्स, I, 22.
10. राहुल साककृत्यायन, बुद्धचर्या, 144; मिथिला सरण पाण्डे, हिस्टोरिकल ज्योग्राफी एण्ड टोपोग्राफी ऑफ विहार, दिल्ली, 1963, 97.
11. मिथिला सरण पाण्डे, पूर्वोक्त, 97.
12. महाभारत, II, 304.
13. हेमचन्द्र राय चौधरी, पालिटिकल हिस्ट्री ऑफ एन्सिएन्ट इण्डिया, कलकत्ता, 1954, 55 (पाद टिप्पणी)।
14. सुत्तनिपात अठ्कथा, II, 437, 439.
15. विनयपिटक, II, 237.
16. अंगुत्तर निकाय, IV, 101; V, 22; संयुक्त निकाय, II, 135; V. 401.
17. द्रष्टव्य, शिव कुमार मिश्र, पालि साहित्य के आधार पर मिथिला का भूगोल, वी० पी० कोइराला नेपाल-इण्डिया फाउन्डेशन, नेपाली राज दूतावास, नई दिल्ली, शोधकार्य योजना, चतुर्थ अध्याय (प्रकाशनाधीन)।
18. जातक, V, 2,5,6.
19. महावग्ग, 6·5·1·21; सुत्तनिपात, से० बु० ई०, X, 95; मज्झिम निकाय, 2·7·4.
20. विनयपिटक, I, 245.
21. वही, 247.
22. सुत्तनिपात, से० बु० ई०, X, 95; महावग्ग, 6·5·2·15.
23. राहुल साकृत्यायन, उपरोक्त, 151.
24. मज्झिम निकाय, 2·1·4.
25. हवलदार त्रिपाठी, बौद्धधर्म और बिहार, पटना, 1960, 90.
26. मज्झिम निकाय, 2·2·6; महावग्ग, 6·5·3·1.
27. मज्झिम निकाय, I, 359.
28. वही, 447.
29. वही, II, 146; सु० नि०, 102.
30. संयुक्त निकाय, V, 225–7
31. थेरगाथा अठ्कथा, II, 47.
32. मज्झिम निकाय अठ्कथा, 586.
33. मज्झिम-निकाय, I, 124, 235, 366; III, 130.
34. अंगुत्तर निकाय, III, 395.
35. संयुक्त निकाय, I, 123, 126.
36. अंगुत्तर निकाय, IV, 163.
37. संयुक्त निकाय, II, 271.
38. वही, IV, 309.

39. महावग्गा, 2, 9, 16; जातक, 330.
40. जातक, 361.
41. अमलानंद घोष, दि सिटीज इन अर्ली हिस्टारिकल इण्डिया, शिमला, 1976, 46.
42. ई० जे रैप्सन (सं०), कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, I, 179.
43. आई० बी० हार्नर, बुक ऑफ डिसिप्लीन, II, 83, सं० 2.
44. रीज़ डेविड्स, डायलॉग ऑफ दि बुद्ध, 126.
45. रीज़ डेविड्स, काइन्डेड सेयिंग्स, I, 233.
46. ए० एल० वूडवर्ड, ग्रेजुअल सेयिंग्स, I, 233.
47. रीज़ डेविड्स एण्ड स्टेड, पालि-इंग्लिश डिक्सनरी, 190.
48. राम गोपाल, इण्डिया ऑफ वैदिक सूत्र, 150.
49. नरेन्द्र वागले, सोसाइटी एट दि टाईम ऑफ दि बुद्ध, वम्बई, 1966, 21.
50. से० बु० ई०, X, 95.
51. मिथिलासरण पाण्डे, पूर्वोक्त, 173.
52. हवलदार त्रिपाठी, बिहार की नदियाँ, पटना, 397.
53. वही।
54. शिव कुमार मिश्र, पालि साहित्य के आधार पर मिथिला का भूगोल, तृतीय अध्याय; द्रष्टव्य, शिव कुमार मिश्र, 'मिथिला के बौद्ध स्थल', मिथिला : संस्कृति एवं परम्परा, पटना, 2001, 209–10.
55. सुत्तनिपात, से० बु० ई०, X, 3–5.
56. वही।
57. सुत्तनिपात अठ्कंथा, I, 46.
58. सुत्तनिपात-से० बु० ई०, X, 97; तेन खो पन समयेन सेलों ब्राह्मणों आपणे पटिवसति तिन्नम् वेदानम् पारगू सनिघन्डु केटुमानम् साक्खरप्प भेदानम् इतिहास पञ्क मानम् पदको वेय्याकरणो लोकायत महापुरि सलक्खनेसु अनवयी तीनि मानवक सतानि मन्ते वाकेति।

सम्पर्क—द्वारा-शिवदत्त शर्मा

बापूनगर, उत्तरी मंदिरी,

पटना - 800001

दूरभाष - 522480



बिहार सरकार

कला संस्कृति एवं युवा विभाग

कोशी क्षेत्र का सांस्कृतिक एवं पुरातात्त्विक महत्त्व

पुरातत्त्व निदेशालय, बिहार

कोशी क्षेत्र का सांस्कृतिक एवं पुरातात्त्विक महत्त्व

संपादक मंडल

मुख्य संपादक

श्री विजय शंकर सिन्हा

उप-सचिव-सह-निदेशक (पुरा०)

संपादकगण

श्री राम शेखर सिंह,

अभिलेख पदा०

डॉ० अतुल कुमार वर्मा

डॉ० कुमार आनन्द

डॉ० सत्येन्द्र कुमार झा

डॉ० सुधीर कुमार यादव

कला संस्कृति एवं युवा विभाग

पुरातत्त्व निदेशालय, बिहार

अधीक्षक, बिहार सचिवालय मुद्रणालय, पटना - 7 द्वारा मुद्रित।

अनुक्रमणिका